International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-09-2021, Accepted: 14-10-2021, Published: 30-10-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 115-117

'मैला आँचल' का राजनीतिक पक्ष

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य, वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महोबा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारश
आधुनिक युग की विधा उपन्यास महाकाव्य का स्थानापन्न माना जाता है। महाकाव्य जैसी विविधता, फैलाव, सम्पूर्णतया उपन्यास में ही संभव होती है। 'मैला आँचल' आजादी के बाद का महान उपन्यास है। 1954 में प्रकाशित 'मैला आंचल' एक घटना थी। मैला आंचल वैसे तो एक आंचलिक उपन्यास है लेकिन यह विविधताओं से पूर्ण लगभग सभी गांवों का प्रतिनिधित्व करता है। 'मैला आँचल' में कथ्य की विविधता है, यह गहरे अर्थों में राजनीतिक उपन्यास है। 'मैला आंचल' में कांग्रेस, सोशालिस्ट पार्टी, कम्युनिष्ट, काली टोपी (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) प्रमुख राजनीतिक दल हैं लेकिन कांग्रेस एवं सोशलिस्ट पार्टियों का चित्रण अधिक मुखर हुआ है। इस लेख में मैं 'मैला आंचल' उपन्यास में निहित राजनीति की छानबीन करूंगा।

मुख्य शब्द: मैला आंचल, रेणु, सोशलिस्ट, कांग्रेसी, गांधीवाद, राजनीति

उपन्यासकार ने बड़े तटस्थ ढंग से राजनीतिक पार्टियों के नैतिक और सैद्धान्तिक खोखलेपन का चित्रण किया है। जाति प्रथा किस तरह नैतिक भ्रष्टाचार को जन्म देती है, इसका दस्तावेज है 'मैला आंचल'। सोशलिस्ट पार्टी वाले आरंभ में ही जातिभावना के आधार पर अपनी पार्टी का संगठन करना चाहते हैं। कॉमरेड गंगा प्रसाद सिंह यादव को मेरीगंज में संगठन के लिए इसलिए भेजते हैं क्योंकि वहाँ यादवों की संख्या ज्यादा है।

'मैला आंचल' में जिस राजनैतिक चेतना के दर्शन होते हैं, उसमें एक ओर समाजसेवी राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट चरित्रों को उद्घाटित करने का भाव है और दूसरी ओर शोषित जनता की पक्षधरता को भी अभिव्यक्ति मिली है साथ ही राजनीति का गांधीवादी आदर्श भी किस तरह निर्जीव व हास्यास्पद होता है; इसको दिखाया गया है। पहले वर्ग के अन्तर्गत बालदेव जैसे कांग्रेसी समाज सेवियों के चरित्र का उद्घाटन हुआ है। वह बात–बात पर 'गाँधी जी की जै एवं 'जाय हिन्न' बोलता है, हिंसावाद' न करने की दुहाई देता है। उसकी प्रत्येक क्रिया में भारतमाता 'गाँधी जी' एंव अनसन की दुहाई होती है लेकिन उत्तरोतर यही बालदेव अवसरवारी चरित्र के रूप में प्रकट होता है। वास्तव में यह बालदेव उन असंख्य बालदेवों का प्रतीक है जो आज भी गाँधी जी की पूंछ को पकड़कर अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे हैं। और समाजसेवा, देशभक्ति के नाम पर राष्ट्र की अशिक्षित और भोली–भाली जनता का शोषण कर रहे हैं। रेणु यह प्रतिष्ठित करने में सफल रहे हैं कि जनता अब इस प्रकार के जन–सेवकों को पहचानने लगी है और इनके द्वारा अब और अधिक समय तक उनकी आंखों में धूल नहीं झोंका जा सकता।

गांधीवादी आदर्शों से अधिक समाजवादी दृष्टि और आदर्श ने किसान श्रमिकों को आकर्षित किया है। इसीलिए सोशलिस्ट कालीचरन की शोषित संथालों में गहरी पैठ है। सभा स्थल पर ही तीन सौ मेम्बर बन पाते हैं। कोई भी ऐसा संथाल नहीं है जो इसका मेंबर न हो। मलेरिया सेन्टर के खुलने से जिन संथालों को जरा भी खुशी नहीं हुई वे कालीचरन के भाषण से प्रभावित व खुश होते हैं। लेखक के शब्दों में जैसे उनके घावों पर कोई ठण्डा लेप लगा रहा हो, यह ठण्डा लेप कालीचरन के सिर्फ सिद्धांतों में ही नहीं व्यवहार में भी था। गाँधी जी का सेवक बालदेव जब बोलने खड़ा होता है तो सोशलिस्ट बालदेव उसे बोलने से रोक देता है– 'बालदेव जी आपका भाखन हम लोग बहुत सुन चुके हैं। आप पूंजीवाद हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते। बासुदेव का यह कथन अवसरवादी कांग्रेसियों का वर्ग–चरित्र उघाड़ देता है। वासुदेव ही नहीं सामान्य जनता भी बालदेव के बगुला भगत रूप को पहचानने लगी है। वह भी उसका विरोध करती है– बैठ जाइये, बैठ जाइये! जाइये कपड़े की पुर्जी बाँटिए, चीनी बिलेक कीजिए।' जनता भी इस बात को जानती है कि जनता की सहायता और समाज सेवा की आड़ में ये अवसरवादी नेता अपना स्वार्थ साधने की तिकड़में लगाते रहते हैं।

बालदेव एक प्रकार का अवसरकारी पात्र है। दूसरे प्रकार के अवसरवादी वे हैं जो अंग्रेजी राज में अंग्रेजों की जी हजूरी करते थे और अपने देशवासियों के साथ गद्दारी, और अब कांग्रेसी राज में कांग्रेसी बनकर जनता का शोषण करते हैं। विश्वनाथ प्रसाद ऐसे ही चरित्रों में एक हैं। इस उपन्यास का ईमानदार पात्र बावनदास ऐसे टुच्चे कांग्रेसी अवसरवादियों के विषय में बतलाता हुआ कहता है – 'चानमल मारवाड़ी का बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा थाः 'जेहल में भोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपत नगर थाना कांग्रेस का सभापति है और सुनोगे? दुलारचन्द कापरा को जानते हो न? वही जुआ कम्पनी वाला, एक बार नेपाली लड़कियों को भगाकर लाते समय जोगवनी में पकड़ा गया था। वह कटहा थाना का सेकरेटरी है। भारतमाता और भी जार–बेजार रो रही है।"[1] यह कांग्रेसियों का चरित्र है जो मैला आंचल में बखूबी दिखाया गया है। बड़ी दिलचस्प बात यह है कि आज भी और बड़े पैमाने पर राजनीति का अपराधीकरण हुआ है। रेणु की पैनी एवं दूरदर्शी दृष्टि इसी से उजागर हो जाती है।

दूसरी ओर राजनैतिक चेतना के अन्तर्गत, 'मैला आंचल' में एक अन्य पक्ष भी परिलक्षित होता है। यह पक्ष सोशलिस्ट पार्टी के कालीचरन और उसके साथियों द्वारा प्रस्तुत हुआ है। सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं में शोषित जनता की पक्षधरता का भाव है। कालीचरन सामान्य लोगों के सुख–दुखों की बात कहता है। वह उनके छीने गए अधिकारों को वापस दिलाने की बात करता है। इसलिए युगों से पीड़ित और उपेक्षित लोगों को कालीचरन की बातें अच्छी लगती है। कालीचरन कहता है – मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूं। सोए हुए को जगाना चाहता हूं।..... सोशलिस्ट पार्टी चाहती है आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी के सभी हक मिलने चाहिए। आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह कांग्रेस का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूं।' कालीचरन बातों में ही नहीं व्यवहार में भी जनता का शुभेच्छु है। हैजे के समय गाँव वालों को सूई लगवाता

है। कै और दस्त के भरे हुए बिछावन पर लेटे हुए रोगी की सेवा करता है।

राजनैतिक स्तर पर वह जमीन जोतने वाले किसानों को उनके अधिकारों का स्मरण कराता है। उसकी पार्टी में सब बराबर हैं, सब साथी हैं, कोई लीडर नहीं है। 'जमीन जोतने वाले संथालों के लिए यह बात बहुत महत्वपूर्ण होती है। कालीचरण की दो टूक, स्पष्ट बात संथाल किसानों के मन की बात है। यह क्रान्ति, मशाल, वर्ग संघर्ष की बात आज के समाज की वास्तविकता है, मैला आँचल में पिछड़ों, गरीबों का राजनीतिक उभार आज के समाज की सत्यता है।

मैला आँचल में एक काली टोपी वालों का भी दल है हालांकि यह राजनीतिक दल नहीं है लेकिन आता है लगभग उसी अन्दाज में। राजपूत टोला इस दल से प्रभावित है। हरगौरी इस दल को अपने गाँव में लाना चाहता है। काली टोपी वाले संयोजक जी अपनी धुन में व्यस्त हैं। वे यवनों का विरोध तथा शुद्ध हिन्दुओं का समर्थन एवं हिन्दू संस्कृति का प्रचार करते हैं, दूसरी और उनकी बौद्धिक क्लास को सोशलिस्ट पार्टी का वासुदेव सटीक नाम 'बुद्धू क्लास' देता है। ये काली टोपी वाले उपन्यास में कहीं–कहीं मिलते हैं, इनका कोई प्रमुख कार्य तो नहीं दिखाई पड़ता लेकिन एक बात अवश्य पता लगती है कि किसी दल को जाति के आधार पर किस तरह समर्थन मिलता है; इसका उदाहरण है – राजपूतों का इनके साथ रहना, सोशलिस्टों की प्रतिक्रिया में इनको उभारने की आकांक्षा।

जातिवादी राजनीति का दिलचस्प उदाहरण बावनदास की सोच में मिलता है, जिसमें वह सोचता है – 'अब लोगों को चाहिए अपनी–अपनी टोपी पर लिखवा लें – भूमिहार, राजपूत, यादव, कायस्थ, हरिजन। दूसरी जगह बावनदास कहता है – "सब चौपट हो गया... यह बेमानी ऊपर से आयी है। यह पटनिया रोग है... अब तो धूमधाम से फैलेगा। भूमिहार, राजपूत, कैथ, जादव सब लड़ रहे हैं... अगले चुनाव में तिगुना मेले चुने जाएंगे। किसका आदमी चुना जाए इसी की लड़ाई है। यदि राजपूत पाटी के लोग ज्यादा आये तो सबसे बड़ा मन्तरी भी राजपूत होगा। सब मेले मंतरी होना चाहते हैं। देश का काम, गरीबों का काम जो भी करते हैं; एक ही लोभ से करते हैं।"[2] यह उद्धरण जहाँ राजनीतिक मोहभंग को उद्घाटित करता है, वही आज के समाज की भी सत्यता है।

'मैला आँचल' में इस तथ्य का पर्दाफाश किया गया है कि किस प्रकार कांग्रेस पार्टी शुरू से ही जनता को नया–नया छलावा देकर उसके विद्रोह की धार को कुन्द कर रही है। कांग्रेस पार्टी के अधिकतर नेता, जमींदार और पूँजीपतियों के समाज से आते थे जो एक तरफ तो भूमिहीन किसानों का वोट पाने के लिए उन्हें झूठे आश्वासन देते थे दूसरी तरफ अपने वर्ग स्वार्थ से जुड़े रहने के कारण भूमि सुधार के कार्यक्रमों को खटाई में डालते रहते थे। सोशलिस्ट पार्टी के भूमि सुधार आन्दोलन के जवाब में कांग्रेस पार्टी दफा 40 का छलावा पेश करती है। कांग्रेस पार्टी यह अच्छी तरह जानती है कि यह कोई नया कानून नहीं है और इसके लागू होने एवं सिद्ध करने में कितनी दिक्कतें हैं। हुआ वही जो जो होना था, विश्वनाथ प्रसाद जैसे कांग्रेसी ही इसको असफल कराते हैं। किसानों को अपनी जमीनों से बेदखल होने की नौबत आ जाती है। किसान कालीचरन के नेतृत्व में संघर्ष पर उता: होते हैं तो विश्वनाथ प्रसाद उन्हें अकाल का भय दिखाकर इससे विरत कर देता है। कालीचरन इस शर्त पर आन्दोलन वापस लेता है कि बाद में किसानों की गर्दन पर छुरी न चले। दफा 40 खारिज होने में किसानो पर ही कांग्रेसी आरोप लगाते हैं। कांग्रेसी गरीबों को छलने का कितना खूबसूरत बहाना करते हैं, यह इस तथ्य से जाहिर होता है कि "बात यह है कि 95 सैकड़े लोगों ने तो गलत और झूठा दावा किया होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। सही और वाजिब हक वाले बाकी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करने वालों के कारण बेमौत मारे गये। इसमें कानून का क्या दोष है। लोगों का नैतिक पतन हो गया है।"[3]

1947 के कांग्रेसी मंत्रिमंडल के समय इस जिले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था। उसने संथालों के प्रति अन्याय समझकर कि सारी मेहनत ये करते हैं और घर की जमीन तक दूसरों की, इसको सुधारने की चेष्टा करता है। जिले भर के भूमिहार, जमींदार और राजा घबरा गए थे। जिले के अधिकांश नेता भूमिहार थे एवं अपने को किसान कहते थे। इन सबने अंग्रेज कलक्टर पर इल्जाम लगाकर कि यह संथालों को भड़काकर जिले में अशांति फैलाकर कांग्रेसी मंत्रिमंडल को असफल बनाने की चेष्टा करता है, इसके प्रमाण स्वरूप उन्होंने भाड़े के लठैतों एवं ग्रामीणों से संथालों के खेतों एवं घरों पर हमला करता एवं संथालों की तीर से घायल होने पर, पेश किया। "कांग्रेस संदेश पत्र के सम्पादक विद्यालंकार ने आज पत्र में थोड़ी सी सम्वेदना दिखाई तो उस पर कांग्रेस जिला मंत्री की टिप्पणी थी – 'विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा। विद्यापीठ में गधे के सिर पर सींग तो नहीं जम सकती है।"[4] यह सोच कांग्रेस के जिला मन्त्रियों की थी जो कि गांधीवादी आदर्शों पर खड़ा था।

बालदेव उन कांग्रेसियों का प्रतीक है जो गाँधी जी की 'अहिंसा को हास्यास्पद बना देते हैं। मेरीगंज मठ के मठाधीश का चयन भी किसी राजनीति से कम नहीं है। काशी से आया 'अचारज गुरु' एक गुन्डा नागा की सहायता से एक गुन्डा को महन्थ बनवाना चाहता है, इसके एवज में उसको अच्छी घूस मिली है। इस कुचक्र में पिसने जा रहे थे रामदास एवं लक्ष्मी दासिन। बालदेव का अहिंसावाद यहाँ निष्क्रियता का पर्याय बनकर आया है। कालीचरन के न्याय करने से भी बालदेव का अहिंसावाद उसमें टांग लड़ाता है, वह अनशन करने की घोषणा करता है। आज की राजनीति में अनशन के दुरूपयोग की शुरुआत यहीं से मानी जा सकती है।

कालीचरन का समाजवाद भी जनता की अपेक्षा अपनी पार्टी के हितों पर अधिक न्योछावर होने लगा। दफा 40 की अर्जियों के नामंजूर होने पर कालीचरन खुश है, वह सोचता है– 'यदि रैय्यत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी कांग्रेस में चले जाते। अब संघर्ष में सब सोशलिस्ट पार्टी में रहेंगे।'[5]

कांग्रेस की तरह सोशलिस्ट पार्टी का भी पतन होता है, यदि कांग्रेस में पूँजीपति और भूमिपति घुसते हैं तो सोशलिस्ट पार्टी में डकैतों और खूनियों का प्रवेश होता है। सोमा जट, चलित्तर कर्मकार, सुन्दर अपराधी हैं। डकैती के पैसे से पार्टी में चन्दा जाता है लेकिन यह उल्लेखनीय है कि कालीचरन यह नहीं जानता कि पैसा चोरी का है।

सोशलिस्ट महिला कालीचरन को अपशब्द कहती है। कालीचरन जो कि ईमानदार और पार्टी के प्रति समर्पित चरित्र है, उसके जेल से भागने पर बड़े नेताओं का बात तक न करना सोशलिस्ट पार्टी की असंगतियां हैं लेकिन कालीचरन का विश्वनाथ से यह कहना दृ 'विसनाथ मामा आप कांग्रेस के लीडर हैं। इस बार देखना है कि कांग्रेस गरीबों की पार्टी है या अमीरों की...लेकिन गरीबों के खिलाफ कदम बढ़ाइएगा तो हम भी मजबूर होकर... ।'[6] एवं चलित्तर कर्मकार को पार्टी से निकालकर इस पार्टी ने अच्छा उदाहरण पेश किया।

कालीचरन और बासुदेव में फूट पड़ जाती है, यूं तो इसका प्रत्यक्ष कारण सुमिरत दास की चालाकी लगती है और है भी पर इसके मूल में ऊपर के नेताओं की आपसी फूट है। सोशलिस्ट पार्टी के बड़े नेता आपस में बंटे हुए हैं, तद्नुसार कार्यकर्ता भी। यह आज के जोड़–तोड़ की राजनीति का अच्छा उदाहरण है।

आज जो घटिया दलीय प्रतिस्पर्धा हो रही है, एक दूसरे पर कीचड़ उछालने की हवा तेजी से चली है, यह हवा शायद मैला आंचल से ही होकर आ रही है। कांग्रेसी छोटन मेरीगंज के सोशलिस्ट नेताओं, काली, बासुदेव, सुन्दर, सोनमा को डकैती केस में चालान करा देता है। डॉ. प्रशान्त जैसा निर्दोष व्यक्ति भी इस दमन चक्र में पीसा

जाता है। छोटन बालदेव पर इसलिए खफा है क्योंकि घर–घर सोशलिस्ट घरघराने लगे हैं। वह बालदेव को मेरीगंज से हटा लेना चाहता है।

परिस्थितियों के चलते विश्वनाथ प्रसाद तहसीलदारी से इस्तीफा दे देते हैं। विश्वनाथ प्रसाद तहसीलदारी से इस्तीफा देकर कांग्रेस ज्वाइन करते हैं। गरीब किसानों की जमीनें लुट रही है। हरगौरी सिंह आज के हवालाकांड में फंसे अफसरों की तरह खुद अपने नाम जमीन नहीं ले सकता इसलिए दूसरों के नाम से लेने का जुगाड़ कर रहा है।[7]

बालदेव जैसे कांग्रेसियों का क्रमिक पतन इस उपन्यास में दिखाया गया है। वह बावनदास द्वारा गांगुली साहब को दी जाने वाली चिट्ठियों को अपने पास रख लेता है। व्यक्तिगत ईर्ष्या का भयावह रूप बालदेव के चरित्र में देखने को मिलता है। वह जीते जी पत्रों को नहीं देना चाहता। उसे भ्रम है कि पत्रों को देखते ही 'जमाहिरलाल' बावनदास को मिनिस्टर बना देंगे। सत्तालोलुपता उसके अन्दर भी छिपी हुई है। ईर्ष्यावश वह चिट्ठियों को जलाने का प्रयास करता है जिसे बचाने में लक्ष्मी जल जाती है। बालदेव का इसके बाद का निश्चय बड़ा ही दिलचस्प है – 'वह पुरैनिया जाएगा, वहीं से चन्ननपट्टी चला जाएगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा, अपने समाज में, अपनी जाति में रहेगा।... जाति बहुत बड़ी चीज होती है। जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े–बड़े लीडर अपनी–अपनी जाति की पार्टी में हैं।... यह तो राजनीति है। लक्ष्मी क्या समझेगी।' बालदेव जैसे गांधीवादी कांग्रेसी की यह सोच है। भारतीय राजनीति की जातिवाद में परिणति की मानसिकता का बालदेव अच्छा प्रतीक बन गया है।

'मैला आंचल' में होली के गीतों में राजनीतिकता झलकती है। कालीचरन का दल सबसे बड़ा है, होली में उसके दल वाले गाते हैं–

'बरसा में गड्ढे जब जाते हैं भर
बेंग हजारों उसमें करते हैं टर्र
वैसे भी राज आज कांग्रेस का है
लीडर बने हैं सभी कल के गीदड़। जोगीड़ा स र र र
चरखा कातो खद्दड़ पहनो रहे हाथ में झोली
दिन दहाड़े करो डकैती बोल सुराजी बोली। स र र र

गांधीवाद किस तरह अप्रासांगिक होता है इसको भी इस उपन्यास में दिखाया गया है। गांधीवादी राम किसुन आश्रम में जब मांस, मछली, अंडा आता है; गांधीवादी आदर्शों का एक प्रतीक 'ब्लैक प्रिंस' कुत्ता, जो कि रविवार को निराजल भूखा रहता था, हलुआ पूड़ी तक नहीं पूछता था, आजकल हड्डी चबाता है, बाद में मर भी जाता है, इस उपन्यास में गाँधीवादी आदर्शों की यह परिणति है। इस सम्बन्ध में डॉ. कान्ति वर्मा की यह टिप्पणी बहुत सटीक है दृ 'गाँधीवादी युग के मूल्य स्वातन्त्र्योत्तर युग में आकर किस प्रकार निष्फल सिद्ध हो गए और एक विचित्र से नैतिक शून्य का सामना भारतीय मानस को करना पड़ा, उसका सफल चित्रण रेणु ने किया है।'[8]

इस उपन्यास की राजनीति का रूप यह भी है कि गांधीजी के अस्थि कलश को लेने के लिए अमीन बाबू एवं ससांक जी में प्रतिस्पर्धा होती है। राजनीतिक मोहभंग का भी बड़ा सफल चित्रण हुआ है। विश्वनाथ प्रसाद के मेम्बर बन जाने पर बालदेव का मन डिगता है। बावनदास का भी मोहभंग होता है। वह सोचता है सभी पार्टी समान है। सभी मेले मंतरी बनने की दौड़ में हैं। चुन्नी गुंसाई सोशालिस्ट पार्टी ज्वाइन कर लेता है। जिन पत्रों को बावनदास बड़ी श्रद्धा से सहेजे था, उसे बालदेव का आग के हवाले करना जहाँ एक ओर बालदेव की क्षुद्र मानसिकता का परिचायक है; वहीं गाँधीवादी मूल्यों की विडम्बनापूर्ण त्रासदी का।

50 गाड़ियों में लदकर जा रहे कपड़े, चीनी, सीमेंट की कालाबाजारी के प्रसंग में, कलीमुद्दीनपुर होटिल बंगला में 'कापरा' मुर्ग–मुसल्लम का आनन्द लेता है, – अब सुरा के बाद सुन्दरी भी तो चाहिए। इसके लिए कापरा कहता है– 'ऊंह' ऐसा जानता तो कटहा से ही दो (शरणार्थी) रेप्यूजिनी को उठा लाते, सब मजा किरकिरा कर दिया। ऐसे चरित्र के पात्र कांग्रेस में हैं।

इस उपन्यास में सबसे ईमानदार चरित्र बावनदास की मृत्यु, जो कि अपने सत्य, न्याय, ईमान के चलते मरता है, गांधीवादी आदर्शों' के खोखलेपन एवं उसकी अप्रासंगिकता का परिचायक है। बावनदास की हत्या कांग्रेसी ही करते हैं, ऐसी दुर्गति इस उपन्यास में दिखाई गई है। कालाबाजारी के प्रसंग में प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दारोगा' की याद आती है। इस कहानी का खलनायक पं. अलोपीदीन भी नमक की तस्करी करता है लेकिन आम जीवन में साफ सुथरी छवि भी रखता है। 'नमक का दारोगा' कहानी का अन्त बड़ा ही सुखद हुआ है जबकि 'मैला आंचल' हमारे लिए कई सवाल अनुत्तरित छोड़ जाता है। बावनदास जैसे ईमानदार चरित्र की दुर्दशा हो जाती है। अपनी जीवन भर की सेवा का परिणाम उसे मिलता है कि उसकी लाश तक को भी इस सीमा में नहीं रहने दिया जाता। इस धरती को आजाद करने में जिसने असंख्य यातनाएं सही। उसी धरती पर उस डेढ़ फुट के आदमी को डेढ़ हाथ जमीन भी नहीं नसीब हो पाती। पाकिस्तान के सैनिक भी बावनदास की लाश को नदी में फेंक देते हैं; इस पर रेणु का यह कथन बड़ा ही मार्मिक है– "बावनदास ने दो आजाद देशों की, हिन्दुस्थान और पाकिस्तान की ईमानदारी को, इंसानियत को बस दो डेग में ही नाप लिया।" यह बावनदास की मृत्यु नहीं, इस उपन्यास में गांधीवाद की मृत्यु है, उसके मूल्यों के खोखलेपन एवं आप्रासंगिकता का पर्याय है।

बावनदास की झोली को भी कापरा हटा देता देता है। झोली हटाते समय, फटकर उसका एक चिथड़ा पेड़ पर लटक जाता है। यह बावनदास की झोली का चिथड़ा नहीं, गाँधीवाद लटक रहा है जो कि अब एक आस्था और विश्वास की चीज हो गई है। लेकिन यह विश्वास भी गलत है; ठीक उसी प्रकार जैसे झोली के चीथड़े को चिथरिया पीर का चीथड़ा समझना।

इस तरह 'मैला आंचल' का अंत होता है, हालांकि अंत इसके आगे जाकर होता है लेकिन मुझे सही अंत यहीं लगता है। 'मैला आँचल' का राजनीतिक पक्ष आज भी नयापन रखता है, 'मैला आँचल' की राजनीति में निहित विडंबना, आज की राजनीति की भी विडंबना है, जरूरत है उस पर सोचने–समझने एवं सकारात्मक कदम उठाने की।

सहायक ग्रंथ

1. मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1986
2. 'मैला आंचल ही रचना प्रक्रिया – देवेश ठाकुर, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण–2007
3. सं. भारत यायावर – मैला आंचल का वाद विवाद और संवाद, आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा), प्रथम संस्करण – 2006

संदर्भ ग्रंथ

1. मैला आंचल, पृष्ठ – 136
2. वही, पृष्ठ – 310
3. वही, पृष्ठ – 182
4. मैला आंचल 19वें परिच्छेद में पृष्ठ – 102 पर
5. मैला आंचल, पृष्ठ – 168
6. वही, पृष्ठ – 181
7. रेणु रचनावली, मैला आंचल से उद्धृत पृष्ठ – 171
8. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास' – डॉ. कान्ति वर्मा